सखी इंद्रावती एम कहे, चालो जैए वालाजी ने पास।
कंठ वलाई मारा वालाजी संगे, कीजे रंग विलास।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, चलो हम वालाजी के पास चलें और उनके गले में हाथ डालकर आनन्द की लीला खेलें।

एवी वात सांभलतां वालेजी अमारे, आवीने ग्रही मारी बांहें।
कहो सखी पेहेली रामत केही कीजे, जे होय तमारा चित मांहें।। ९ ।।

हमारी यह बात सुनकर वालाजी ने आकर हमारी बांह पकड़ ली और पूछने लगे, हे सखी! अपने मन की बात बताओ, पहले कौन-सी रामत खेलें।

सखियो मनोरथ होय ते केहेजो, रखे आणो ओसंक।
जेम कहो तेम कीजिए, आज करसूं रामत निसंक।। १० ।।

वालाजी कहते हैं, बेधड़क होकर अपने मन की चाहना बताओ, जैसे तुम कहोगी वैसे ही किया जाएगा। आज निडर होकर रामत खेलेंगे।

पूरूं मनोरथ तमतणां, करार थाय जीव जेम।
सखी जीवन मारा जीव तमे छो, कहो करूं हूं तेम।। ११ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखी! तुम मेरे जीव के जीवन हो। इसलिए जिस तरह से तुमको आनन्द आए तथा तुम्हारे मन की इच्छा पूर्ण हो, वही काम मैं करूं।

रासनी रामत अति घणी, अनेक छे अपार।
सघली रामत संभारीने, अमने रमाडो आधार।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं, रास की रामतें तो बेशुमार हैं, इसलिए सबको ध्यान में रखकर हमें रामत खिलाइए।

अमे रंग भर रमवा आवियां, कांई करवा विनोद हांस।
उत्कंठा अमने घणी, तमे पूरो सकलनी आस।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हम उमंग के साथ हंसी और विनोद करने आए हैं। हमारे मन में बहुत इच्छाएं हैं। हम सबकी सब कामनाओं को पूरा करो।

अमे अवसर देखी उलासियो, कांई अंगडे अति उमंग।
कहे इंद्रावती अमने, तमे सहुने रमाडो संग।। १४ ।।

यह अवसर देखकर हमारे मन में उल्लास भर गया है। हमारे मन में उमंग है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि आप हम सबको अपने साथ खेल खिलाइए।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ४२५ ।।

चरचरी

मारे वालैए करी उमंग, सखी सर्वे तेडी संग।
रमाडे नव नवे रंग, अदभुत लीला आज री।। १ ।।

हमारे वालाजी ने उमंग भरे मन से सब सखियों को बुलाया है और आज नए-नए तरीके से अद्भुत खेल खिला रहे हैं।

Nijanand App

सखियो मली संघात, सोभित चांदनी रात।
तेज भूखण अख्यात, मीठे स्वरे बाज री।। २ ।।

सब सखियां एक साथ मिलीं। सुन्दर चन्द्रमा की छटकती चांदनी रात है। सुन्दर आभूषणों की लुभावनी मीठी-मधुर आवाज आ रही है।

जोतां जोत वृंदावन, अंगे रंग उतपन।
सामग्री सखी जीवन, नवलो सर्वे साज री।। ३ ।।

वृन्दावन की शोभा देखकर अंग में मस्ती है। सम्पूर्ण जोगबाई नई सजी हैं। सखियां, वालाजी और वृन्दावन सब नई शोभा से सजे हैं।

अंगे सहु अलवेल, करे रे रंगना रेल।
विलास विनोद हांस खेल, लोपी रमे लाज री।। ४ ।।

सखियां लाज-शर्म छोड़कर अपने मस्ती से भरे अलमस्त अंगों से आनन्द, विनोद तथा हंसी का खेल खेलती हैं।

वचे वचे वाए वेण, रंग रस खिण खिण।
उपजावे अति घण, पूरवा पूरण काज री।। ५ ।।

बीच-बीच में वालाजी बांसुरी बजाते हैं और पल-पल में हम सबकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए आनन्द बढ़ाते हैं।

रमवुं उनमदपणे, वालाजी सूं रंग घणे।
कर कंठ धणी तणे, विलसूं संगे राज री।। ६ ।।

सखियों ने मन में विचारा कि आज वालाजी के गले में हाथ डालकर मस्ती के साथ आनन्द भरी रामत खेलेंगे।

वाणी तो बोले मधुर, करसूं ग्रही अधुर।
पिए वालो भरपूर, राखी हैडा मांझ री।। ७ ।।

वालाजी मीठी-मीठी बातें बोलकर सखियों को हाथ से खींचकर, हृदय से चिपटाकर अधरामृत का पान करते हैं।

रमती इंद्रावती, घातो घणी ल्यावती।
वालैया मन भावती, मुखमां मरजाद री।। ८ ।।

मर्यादा (लाज-शर्म) रखते हुए अनेक दावपेंच से, जो धनी मन भावे श्री इन्द्रावतीजी खेलती हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ४३३ ॥

राग धन्यासरी

वालैयो रमाडे रे, अमने नव नवे रंग।
जेम जेम रमिए रे, तेम तेम वाधे रे उमंग।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, वालाजी हमको नए-नए आनन्द के साथ रामतें खिलाते हैं। हम जैसे-जैसे खेलती हैं, वैसे-वैसे ही हमारे मन में उमंग बढ़ती है।

Nijanand App